Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

साहित्य क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्त्व एवं सीमाएँ

प्रो. पी. आर. रगडे*
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शंकरराव जगताप आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली,त. कोरेगाँव, जि. सातारा

शोध सार

मनुष्य ने विज्ञान के आविष्कारों से अपने जीवन को सुगम एवं सुविधाजनक करने का कोई प्रयास नहीं छोड़ा है। 21 वीं सदी को सूचना एवं क्रांति का युग कहा जा रहा है, जहाँ मनुष्य अब अंतरिक्ष को भी चुनौती देते हुए दूसरे ग्रहों पर बसेरा करने का सपना संजो रहा है। पृथ्वी के जैविक उत्क्रांति से निर्माण हुए मनुष्यों ने निरंतर मस्तिष्क का विकास करके अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। मनुष्य के जीवन की यह क्रांति अब 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' तक पहुँच गई है। एलन मस्क और उनकी टीम द्वारा किए जा रहे प्रयोग और उनकी भविष्यवाणियों से विश्वमंच पर हमेशा हडकंप मच जाता है। इसके बाद विश्वमंच पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को लेकर हमेशा सकरात्मक और नकारात्मक पहलू सुनने मिलते हैं। जीवन को सुगम बनाने के लिए भले ही एआई का प्रयोग हुआ है लेकिन इसने मनुष्य समाज में एक संशय और आतंक का माहौल भी बनाया है, इसमें कोई दोराय नहीं। हर क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अब मानो मनुष्य के प्रयोगशील एवं सृजनशील बुद्धि को भी चुनौती दी है।

कृत्रिम बुद्धि भी मनुष्य के दिमाग की ऊपज है, वह उतने तक ही सोच सकती है जितनी जानकारी उसमें संग्रहित की गई है। उस जानकारी का ठिक-ठाक सुनियोजन वह भले ही कर सकती है लेकिन भावनिक एवं संवेदनात्मक जुड़ाव वह कतई निर्माण नहीं कर पाएगी। इसलिए साहित्य जैसे क्षेत्र में वह लेखक का विकल्प कभी-भी नहीं बन पाएगी। क्योंकि एआई ने दिए लाखों विषयों के आगे भी मनुष्य की बुद्धि की दौड़ है। इसलिए ही कहा गया है कि 'जो न देखे रवि, वह देखे कवि।' साहित्य रचना कर्म में प्राथमिक कार्यों एवं साहित्य सृजन के बाद के कामों के निपटान के लिए एक सहायक उपकरण के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अवश्य लाभ होगा लेकिन वह लेखक की तरह सृजनात्मक साहित्य निर्माण कतई नहीं कर सकेगा।

बीज शब्द: *कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), साहित्य, लाभ, मर्यादा, सृजनात्मकता, भावना, विचार, मशिन, कम्प्यूटर, डाटा संग्रहण, कृत्रिम कार्यशैली आदि।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रो. पी. आर. रगडे
Email: ragadepr@gmail.com

प्रस्तावना

धरती पर मनुष्य एकमात्र ऐसा प्राणी है जो सोच-विचार कर सकता है। इस दृष्टि से वह अन्य प्राणियों से अलग है। मानव ने अपनी बुद्धि के बल पर ही पंचमहाभूतों की ताकत और उनके मानवीय विकास के योगदान को समझा। आज विज्ञान के आचंभित करने वाले आविष्कार मनुष्य के निरंतर जिज्ञासा और खोज की लालसा के ही परिणाम है। मनुष्य ने विज्ञान की ताकत पर पँछियों की तरह न केवल आसमान की बुलंदियों को छूआ है, बल्कि उसने आसमान को भी चुनौती देकर अंतरिक्ष को ही जिज्ञासावश खंगालना शुरू किया है। वह मछली से भी तेज समुद्रों की गहराई को जाँच-परख रहा है। पृथ्वी के जैविक उत्क्रांति से निर्माण हुए मनुष्यों ने निरंतर मस्तिष्क का विकास करके अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। मनुष्य के जीवन की यह क्रांति अब 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' तक पहुँच गई है। विश्वमंच पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को लेकर हमेशा सकरात्मक और नकारात्मक पहलू सुनने मिलते हैं। जीवन को सुगम बनाने के लिए भले ही एआई का प्रयोग हुआ है लेकिन इसने मनुष्य समाज में एक संशय और आतंक का माहौल भी बनाया है, इसमें दोराय नहीं। हर क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानो अब मनुष्य के प्रयोगशील एवं सृजनशील बुद्धि को भी चुनौती दी है। प्रस्तुत शोधालेख में साहित्य के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ और उसकी सीमाओं का आकलन करने का प्रयास किया है।

विषय प्रवेश :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के इतिहास का संक्षिप्त परिचय :

'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' अंग्रेजी शब्द 'Artificial Intelligence' का हिंदी रूपांतरण है। विज्ञान और तंत्रज्ञान की सहायता से विभिन्न मशिन्स और उनके संसाधनों को मनुष्य की बुद्धि की तरह इस्तेमाल करने के उद्देश्य से इसका आविष्कार हुआ है। मनुष्य के दैनिक जीवन के क्रिया-कलापों में मनुष्य के विचार, कार्य करने की शैली, कामों का कम समय में निपटान, कार्य में कुशलता, कम परिश्रम में अधिक गुणवत्तापूर्ण काम आदि को ध्यान में रखते हुए कृत्रिम बुद्धिमता के संसाधनों को मानव जीवन के हर क्षेत्र में इस्तेमाल किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात् मशिनों जैसे कि रोबोट्स के जरिए मनुष्यों की तरह काम करवाना, यह प्राचीन काल से एक कल्पना रही थी। कई फिल्मों में इसे फिल्माया भी गया था लेकिन इसे वैज्ञानिक रूप ने बीसवीं शताब्दी में शुरुआत हुई। इस संदर्भ में अपने जैक कोपलैंड बताते हैं- ''सन 1950 को ब्रिटिश गणितज्ञ एलन ट्यूरिंग ने यह प्रश्न उठाया, 'क्या मशीनें सोच सकती हैं?''[1] और यहीं से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के ट्यूरिंग टेस्ट पर शोध शुरू हुए। अमरिका में सन 1956 में आयोजित डार्टमाउथ सम्मेलन में पहली बार 'Artificial Intelligence' शब्द का प्रयोग हुआ। लेकिन इस पर गंभीरता से कार्य नहीं हुआ। सन 1970 से 1990 के कालखंड में कृत्रिम बुद्धि से ज्यादा कम्प्यूटर एवं उनके अद्यावत तंत्रज्ञान के विकास पर जोर दिया गया। इसकारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुसंधान का कार्य धीमा हुआ- ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुसंधान में सन 1970-1990 के उतार-चढाव के दौर में अत्याधिक अपेक्षाओं के कारण अपेक्षित परिणाम नहीं मिले, तो एआई अनुसंधान को कम समर्थन मिला। इस समय को AI Winter कहा जाता है।''[2] लेकिन सन 2000 के बाद कम्प्यूटर के उन्नत अवस्था और इंटरनेट की विस्मित करनेवाली क्षमता ने फिर से AI के अनुसंधान ने जोर पकड़ा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की कार्यशैली मूलत: डेटा, एल्गोरिदम और कम्प्यूटर के डेटा **विश्लेषण** पर आधारित होती है। इसमें डेटा संग्रह, एल्गोरिदम, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, आउटपुट और सुधार के क्रम से कार्य चलता है।

साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का महत्त्व :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने मनुष्य के जीवन से जुड़े हर क्षेत्र में प्रवेश किया है। मनुष्य के जीवन में प्राचीन काल से साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। साहित्य मनुष्य के जीवन की व्याख्या करता है और उसे समाज जीवन का आयना भी कहा गया है। अर्थात् समाज जीवन जिन-जिन चीजों एवं घटनाओं से प्रभावित होता है, उसकी अनुगूँज हमें साहित्य में दृष्टिगत होती है। विज्ञान के आविष्कार और उससे परिवर्तित हुए मानव जीवन का संज्ञान भी साहित्य ने समय-समय पर लिया है। इस संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का विचार दृष्टव्य है- ''प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है।''[3] अत: भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जनता की चित्तवृत्ति का प्रभावित होना स्वाभाविक है। लेकिन वर्तमान समय में साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की पहल होने का प्राथमिक चरण है। भारतीय लेखक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संसाधनों से विभिन्न सूचना स्रोतों को आत्मसात कर सकते हैं लेकिन केवल एआई के भरोसे साहित्य निर्माण करना फिलहाल तो कठिन है।

साहित्य का सृजन मनुष्य के मस्तिष्क के साथ उसकी भावनाओं से जुड़ी एक जटिल प्रक्रिया है। हर व्यक्ति के सामाजिक अनुभव एवं मान्यताएं अलग-अलग होने के कारण साहित्य सृजन का स्तर भी अलग-अलग हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता लेखक के सृजनात्मक कार्य में केवल साथी बन सकता है, वह लेखक की जगह नहीं ले सकता। वह लेखक को कहानी के अनुसार विचार, पात्रों की रचना, संवाद आदि को लेकर केवल कृत्रिम सुझाव दे सकता है, जिससे ज्यादातर लेखक को सोचने एवं अपनी भावनाओं के नुसार साहित्य लेखन का मार्ग मिल सकता है। इस मार्ग को लेखक को ही स्वयं यात्रा करनी होगी।

लेखक के साहित्य सृजनसंबंधी प्राथमिक कार्यों जैसे कच्चा ड्राफ्ट, उसका लेखन, भाषिक वर्तनी सुधार, संपादन आदि कार्यों में भी कृत्रिम बुद्धि लेखक की सहायता कर सकती है। इससे लेखक के अतिरिक्त मेहनत और समय की बचत हो सकती है। इसकारण लेखक अपने सृजनात्मक कौशल पर अधिक सोच सकता और उसे अधिक निखर सकता है। साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता के पास साहित्य एवं उससे जुड़ी अनगिनत सूचनाएँ एवं भाषा लेखन शैलियों के उदाहरण सुरक्षित होने के कारण वह लेखक को रचना कौशल के संदर्भ में उपयुक्त मार्गदर्शन कर सकता है। साहित्य के विषय के संदर्भ में मौलिकता एवं साहित्य के विषयों के संदर्भ में संबंधित जीवन के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं लोकजीवन से जुड़े विभिन्न सूचनाओं को कम समय में प्राप्त कराने में एआई मददगार साबित हो सकता है। यह साहित्य के क्षेत्र में आने वाले नव लेखकों के लिए एक परिपूर्ण मार्गदर्शक बन सकता है। इस संदर्भ में कहते हैं - ''एआई साहित्य निर्माण में एक शक्तिशाली उपकरण है, लेखक का विकल्प नहीं। जब मानवीय संवेदना और एआई की तकनीकी क्षमता साथ आती हैं, तब साहित्य अधिक समृद्ध, व्यापक और प्रयोगशील बनेगा।''[4] स्पष्ट है कि साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्त्व एक सहायक उपकरण के रूप में है। वह लेखक का विकल्प नहीं बन सकेगा।

साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) सीमाएं :

'साहित्य' मनुष्य के अनुभूतियों, कल्पना, विचार और बौद्धिक क्षमताओं का भावनिक आविष्कार है। हर व्यक्ति के परिवेश, संस्कार, बुद्धि एवं विचार करने की पद्धति अलग होती है और उसके अनुसार ही वह साहित्य में अपनी मान्यताओं को रचता-बसता चला जाता है। कृत्रिम बुद्धि और मानवीय बुद्धि में व्यापक अंतर है। मूलत: कृत्रिम बुद्धि (AI) मानव बुद्धि का ही उगम है और वह हमेशा मानवीय बुद्धि एवं प्रतिभा की आश्रित होगी। मानव के पास होने वाले मौलिक अनुभव, भावनिक संवेदना और जीवन के अनुभव कृत्रिम बुद्धि के पास कतई नहीं सकेंगे। क्योंकि एआई केवल कम्प्यूटर में संबंधित क्षेत्र की मनुष्यद्वारा ही संग्रहीत किए डेटा पर ही कृत्रिम सूचनाए मनुष्य को दे सकती है। जैसे- 'यांत्रिक युग' इस शीर्षक पर चॅटजीपीटी को कविता लिखने को कहेंगे तो वह कविता बनाता है- ''लोहे की धड़कन, तारों की साँस,/कोड में बँधी है अब हर एक आस। उंगलियों से चलती दुनिया सारी,/ पल में दूरी, पल में तैयारी।''[5] अब इस कविता में केवल कम्पूटर को संग्रहित किए संबंधित विषय की सूचनात्मक जानकारी को लयबद्ध तरीके से दर्शाया गया है। ऊपरी तौर पर देखे तो यह कविता हमें ठिक लगती है लेकिन भाव के स्तर पर ये कविता बेजान-सी लगती है। कविता केवल लयबद्ध शब्दों का खेल नहीं है, यह भावनाओं का भी आविष्कार है। कम्प्यूटर के उपकरण मानवीय भावना, संवेदना और उनमें निहित सूक्ष्म विचारों को कतई समझ नहीं सकती। वह केवल सही-गलत का भेद बता सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भरोसे की गई रचना में यांत्रिकता एवं गलत मान्यताएँ भी आ सकती है। इसलिए कृत्रिम बुद्धि केवल साहित्य की रचनाओं की रूपरेखा बनाने के लिए सूचनात्मक जानकारी दे सकती है। सृजनात्मकता, रसात्मकता, संवेदनात्मकता, भावात्मकता, विचरात्मकता और तथ्यात्मकता पर केवल और केवल मानवीय बुद्धि का ही अनुशासन होगा और हमेशा रहेगा।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का आविष्कार अपने प्राथमिक स्थिति में है। समय के साथ इसमें परिवर्तन आते रहेंगे। आज एआई को लेकर बहुत-सा अज्ञान एवं संदेह हमारे बीच व्याप्त हो चुके हैं। हमें यह कतई नहीं भूलना नहीं चाहिए कि कृत्रिम बुद्धि भी मनुष्य के दिमाग की ऊपज है, वह उतने तक ही सोच सकती है जितनी जानकारी उसमें संग्रहित की गई है। उस जानकारी की ठिक-ठाक सुनियोजन वह भले ही कर सकती है लेकिन भावनिक एवं संवेदनात्मक जुड़ाव वह कतई निर्माण नहीं कर पाएगी। इसलिए साहित्य जैसे क्षेत्र में वह लेखक का विकल्प कभी-भी नहीं बन पाएगी। क्योंकि एआई ने दिए लाखों विषयों के आगे मनुष्य की बुद्धि की दौड़ है। इसलिए ही कहा गया है कि 'जो न देखे रवि, वह देखे कवि।' साहित्य रचना कर्म में प्राथमिक कार्यों एवं साहित्य सृजन के बाद के कामों के निपटान के लिए एक सहायक उपकरण के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अवश्य लाभ होगा लेकिन वह लेखक की तरह सृजनात्मक साहित्य निर्माण कतई नहीं कर सकेगा।

संदर्भ-संकेत :-

1. जैक कोपलैंड, दी ट्यूरिंग टेस्ट, www.wikipidiya.com
2. वही, www.wikipidiya.com
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन ,इलाहाबाद, सं.2003,पृ.9
4. राजीव रंजन गिरि, अर्थ- साहित्य: पाठ और प्रसंग, अनुज्ञा बुक्स दिल्ली, सं 2014, पृ. 110
5. चैट जीपीटी इस सॉफ्टवेअर एप से प्रयोग के आधार पर उद्धृत उदाहरण

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)